P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

भारत–अमेरिका सम्बन्धों में आर्थिक तत्वों की भूमिका

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आर्थिक तत्व की प्रधानता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हित की पूर्ति करने के लिये स्वयं को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करने के लिए आर्थिक सम्बन्धों को वरीयता देता है यद्यपि सामरिक हित सर्वोपरि होते हैं भारत और अमेरिका के सम्बन्ध स्वतंत्रता के समय से ही उतार–चढ़ाव के रहे हैं। परन्तु वैश्वीकरण के युग में दोनों राष्ट्रों के मध्य आर्थिक–व्यापारिक सम्बन्ध उत्तरोत्तर प्रगाढ़ता की स्थिति में आ रहे हैं और वर्तमान में अमेरिका–भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार राष्ट्र बन गया है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय हित, सामरिक हित, वैश्वीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध, अमरीका राष्ट्रपति, भारतीय प्रधानमंत्री, विदेश यात्रा आदि।

उमाशंकर शर्मा
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

भारत और अमेरिका दोनों लोकतांत्रिक राष्ट्र हैं। किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र में व्यक्ति को अपनी आर्थिक गतिविधियों को संचालित करने की स्वतंत्रता होती है। भारत यद्यपि मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला देश है जिसने उदारवाद को स्वीकार किया है। वैश्वीकरण के युग में उदारीकरण की प्रक्रिया तेज हुई है, सरकार द्वारा लाईसेंस पद्धति को आसान बनाया गया है। यही कारण है कि भारत एवं अमेरिका के मध्य व्यापार बढ़ रहा है।

साहित्यावलोकन

भारत–अमेरिका सम्बन्धों में आर्थिक तत्वों की भूमिकाशोध पत्र लेखन हेतु उपलब्ध साहित्य का अवलोकन किया गया है शोध के क्षेत्र से सम्बन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं समाचार पत्रों आदि का अध्ययन किया। इस विषय से सम्बन्धित लेख वर्ल्ड फोकस मासिक जर्नल, प्रतियोगिता दर्पण मासिक पत्रिका साहित्य भवन प्रकाषन आगरा, समाचार पत्र, द हिन्दू, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण में मुद्रित हुए जिनका अध्ययन किया गया। बी.बी.सी. हिन्दी न्यूज चैनल के आलेखों का भी शोध–पत्र लेखन में योगदान रहा। तपन बिश्वाल की पुस्तक 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' एवं आर.एस.यादव की पुस्तक –भारत की विदेश नीति एक विष्लेषण' का भी साहित्य अवलोकन किया।

अध्ययन का उद्देश्य

1950 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में भारत और अमरीका के बीच आर्थिक संबंध महत्वपूर्ण ढंग से विकसित हुए। नेहरू युग में अमरीका ने भारत को बहुमूल्य आर्थिक खाद्यान्न सहायता प्रदान की। मई 1960 में भारत और अमेरिका के बीच हुआ पी.एल. 480 समझौता एक महत्वपूर्ण कदम था वहीं दिसम्बर, 1963 में तारापुर परमाणु सयंत्र की स्थापना के लिए 8 लाख अमेरिकी डॉलर एवं भारत को पुष्ट यूरेनियम की आपूर्ति ने परमाणु तकनीक के क्षेत्र में भारत–अमेरिकी सहयोग के एक नए युग का सूत्रपात किया। यद्यपि पंडित नेहरू ने तीन बार अमेरिका की यात्राएं की और संबंधों में सुधार हुआ भी लेकिन भारत–अमरीकी संबंधों में उतार–चढ़ाव आते रहे।

श्री लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल में तो ये संबंध अपने निम्न स्तर पर पहुँच गये। अमरीका की पाकिस्तान समर्थक नीति शास्त्री युग में भारत–अमरीका संबंधों की बड़ी रूकावट बन गई थी।

श्रीमती इंदिरा गांधी के कार्यकाल में जब निक्सन राष्ट्रपति थे, भारत तथा अमरीका के संबंध एक बार पुनः तनावपूर्ण तथा अमैत्रीपूर्ण हो गए।

अक्टूबर, 1974 में अमरीकी विदेश मंत्री डॉ. हैनरी किंसिंजर की यात्रा ने दोनों देशों के बीच आई दरार को पाटने का सफल प्रयत्न किया। 28 अक्टूबर, 1974 को आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक सहयोग पर संयुक्त भारत–अमरीका आयोग की स्थापना के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

श्री मोरारजी देसाई के कार्यकाल में संबंधों में एक बार पुनः गति आई। 1977 में अपनी पेरिस यात्रा के दौरान विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अमरीकी विदेश मंत्री से मिले एवं भारत–अमरीका से घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण तथा सहयोगात्मक संबंध स्थापित करने की आवष्यकता पर बल दिया। जनवरी, 1978 में अमरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर भारत आए।

जून, 1982 में श्रीमती इंदिरा गाँधी अमेरिका गई और राष्ट्रपति रीगन से लम्बी महत्वपूर्ण बातचीत की। दोनों नेताओं ने आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों में और अधिक सहयोगात्मक संबंधों के विकास की आवष्यकता पर बल दिया।

राजीव युग में संबंधों में और गहनता एवं मधुरता आई। जून, 1985 में श्री राजीव गाँधी की पांच दिवसीय अमेरिका यात्रा अमरीकी प्रशासन के साथ घनिष्ठता स्थापित करने में सफल रही। 1982 में प्रारंभ किए गए विज्ञान एवं तकनीकी उपक्रम को तीन वर्षों के लिए और बढ़ाने पर सहमति के साथ–साथ दो नए प्रकार के उपक्रम के संबंध समझौता हुआ। टीकाकरण कार्यक्रम एवं कृषि, वन स्वास्थ्य परिवार कल्याण, जैव चिकित्सा अनुसंधान तथा तकनीकी विकास का कार्यक्रम।

वैश्वीकरण और उदारीकरण की शुरूआत के पष्चात् दुनिया के देशों की राजनीतिक विचारधारा की दीवारें कमजोर हुईं और आर्थिक मुद्दे प्राथमिकता पर आ गए। प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव की नीतियों ने अमरीका को आकर्षित किया और मई, 1992 में विश्व के दो सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच बढ़ते सुरक्षा सहयोग का युग प्रारंभ हुआ। नई विश्व व्यवस्था के आविर्भाव से अमेरिका भारत के महत्व को पहचानने लगा। इस दृष्टि परिवर्तन ने भारत–अमरीकी संबंधों को एक नया सकारात्मक आयाम दिया।

प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल के अल्पकाल में भी क्लिंटन प्रशासन के साथ आर्थिक एवं व्यापारिक संबंधों में तीव्र बढ़ोत्तरी करने पर विचार विमर्श तो हुआ परन्तु इससे आगे संबंध न बढ़ सके।

11 मई, 1998 को वाजपेयी सरकार द्वारा परमाणु परीक्षण ने अमेरिका को भौंचक्का कर दिया। उसने और अन्य बड़े राष्ट्रों ने भारत पर आर्थिक एवं अन्य कई प्रतिबंध लगा दिए। भारत और अमेरिका के बीच संबंधों के सुधार में निश्चय ही जसवंत–ट्रालबोट वार्ताओं का बहुत बड़ा हाथ है।

भारत–अमेरिका के आर्थिक संबंधों की नीति Pivot to Asia के अन्तर्गत आती है चूंकि एशिया महाद्वीप विष्व का नया 'आर्थिक गुरूत्व केन्द्र' बन चुका है साथ ही हालिया वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम की रिपोर्ट के अनुसार आगामी 20 वर्षों में भारत की सफल घरेलू उत्पाद की वार्षिक दर सर्वाधिक रहेगी इन तथ्यों के मद्देनजर दोनों राष्ट्रों के मध्य आर्थिक व्यापारिक सम्बन्धों में सुधार होना स्वाभाविक है। इसी का परिणाम है कि भारत–अमेरिका के मध्य कुल व्यापार 2017 तक (अनुमानित) 126.2 विलियन डॉलर है इस व्यापार में भारत का निर्यात 76.7 विलियन डॉलर पहुँच गया है, भारत का आयात 49.9 विलियन डॉलर है। ये आँकड़े भारत के दृष्टिकोण से शुभ संकेत हैं क्योंकि भुगतान सन्तुलन भारत के पक्ष में है।

इसी तरह भारत में अमेरिका का प्रत्यक्ष विदेशी निवेष 2017 में 44.5 अरब डॉलर था जिसकी दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों को प्रगाढ़ता की स्थिति में लाने महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती।

भारत–अमेरिका के आर्थिक व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए कुछ नियम व विनियमों की स्थापना की गई है यथा वरीयताओं की सामान्यीकृत प्रणाली जो कि विश्व व्यापार संगठन के मोस्ट फेवर्ड नेशन (MFN) सिद्धान्त से छूट का प्रावधान करती है।

भारत–अमेरिका सम्बन्धों से सम्बन्धित कुछ अन्य बिन्दु भी है जिनकी चर्चा करना आवश्यक है। हाल में अमेरिका द्वारा सभी देशों के लिए 94 उत्पादों पर वरीयताओं की सामान्यकृत प्रणाली के अन्तर्गत प्रदत्त लाभ समाप्त कर दिये गये हैं।

भारत GSP (Generalized) system of preference से सर्वाधिक लाभान्वित होने वाला देश है। 2017 में GSP के अर्न्तगत अमेरिका को भारत का शुल्क मुक्त निर्यात 5.6 विलियन डॉलर से अधिक था।

वर्तमान में भारत के 50 उत्पादों (कुल 94 उत्पादों में से) को GSPI हटा दिया गया है जो विशेष रूप से हथकरघा और कृषि क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। भारत का पक्ष इसलिए भी मजबूत है क्योंकि भारत के पास आर्थिक तत्वों के साथ–साथ 3D (Democracyyksdra=) Demand(मांग) व Demography Divident (जनांकिकी लाभांषों) तत्वों की नींव है इससे बड़ा बाजार नियति होगा जिसमें अमेरिका अपने आपको ग्राहक के साथ–साथ व्यापारी के रूप में देखता है।

भारत अमेरिका के मध्य जो व्यापार 2001 में 20 विलियन डॉलर था, 2016 में 115 विलियन डॉलर पहुँच गया एवं 2017 में 126 विलियन डॉलर होने का अनुमान लगाया गया था है।

निष्कर्ष

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, शक्ति के लिए संघर्ष है प्रत्येक राष्ट्र येन–केन प्रकारेण अपनी आर्थिक एवं सामरिक शक्ति में वृद्धि करने के लिए प्रयास करता रहता है ताकि उसके राष्ट्रीय हित सुरक्षित रहे। भारत–अमेरिका के मध्य रिश्तों में 80 के दशक में थोड़ा ठहराव सा देखने को मिला परन्तु उसके उपरांत इनमें निरन्तर सुधार देखा गया है वह चाहे अमरीका राष्ट्रपति जार्ज बुश सीनियर, क्लिंटन, जार्ज बुश जूनियर का कार्यकाल हो या फिर बराक ओबामा और वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कार्यकाल हो। भारतीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के समय भी दोनों राष्ट्रों के मध्य रिश्ते ऊँचाइयां छू रहे थे और मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद ये सम्बन्ध शिखर की ओर अग्रसर हैं। भारत–अमेरिका के मध्य सम्बन्धों की स्थापना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है एवं दोनों राष्ट्रों की पसंद है न कि किसी राष्ट्र की मजबूरी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उपाध्याय, अर्चना, ''भारत की विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005*

2. *कुमार, राजेश, ''इन्डो–यू.एस. पोलिटिको–स्ट्रेटेजिक रिलेशन्स'' इंडिपेन्डेंट पब्लिशिंग कम्पनी दिल्ली, 2007*
3. *कौशिक, देवेन्द्र, ''पेरेस्ट्रोइका एण्ड इण्डो सोवियत रिलेशन्ज इनद नाइन्टी नाईन्टीजः सम रिफ्लेक्शन्स'', कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, दिल्ली, 2012*
4. *कौली, सी.एम., ''प्रमुख देशों की विदेश नीतियाँ'', विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014*
5. *केनेड़ी, पॉल, ''राईज एण्ड फॉल ऑफ दा ग्रेट पावर्सः ईकोनोमिक चेन्जिंग एण्ड मिलिटरी कनफ्लिक्टस फ्रॉम 1500 टू 2000''*
6. *खन्ना, वी.एन. ''अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2013*
7. *द हिन्दू, नई दिल्ली, 25 मई, 2005*
8. *वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम रिपोर्ट 2017–18*
9. *वर्ल्ड फोकस रैफरीड़ रिसर्च, मासिक जर्नल*